

बजरंग दल पर प्रतिबंध, विनाशकाले विपरीत बुद्धि : बोधराज सीकरी

छोटीबड़ीबात

बाज हं के दिन 2004 में ईंच ने लेखियां यो भारत या अनेक था।



dainikbhaskar.com

दैनिक भास्कर

देश तथा विदेशकीय अखबार



इंदौरी, नोएडा, लक्ष्मणऊँ और टेहरादुह होंगे प्रकाशित

बजरंग दल पर प्रतिबंध को लेकर बोधराज सीकरी का कांग्रेस पर निशाना बोले कर्नाटक में कांग्रेस की विनाश काले विपरीत बुद्धि

भास्कर ब्यूरो

गुरुग्राम। कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस द्वारा बजरंगदल पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा को लेकर गुरुग्राम भाजपा नेता व जानेमाने समाजसेवी बोधराज सीकरी ने कांग्रेस पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ एक और 15% लोग मवार्दी पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत



योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर।

एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं है।

कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? श्री सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

दैनिक ट्रिब्यून

बजरंग दल पर प्रतिबंध, विनाशकाले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

गुरुग्राम, 5 अप्रैल (हप्र)

कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। भाजपा नेता और हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने आज यह बात कही और कहा कि एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था



रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है? उन्होंने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

राष्ट्रीय

संहारा



राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण

धर्मातिरण व घुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज

गुरुग्राम (एसएनबी)। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वही दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं।

राष्ट्रीय दैनिक ई-पेपर

भारत सारथी

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

भारत सारथी

मुख्यमान् द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लागा और उसकी पी.एफ.आई. में तुलना करना उनकी हताता का जलतल उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में यही करताया गया, जिसमें वह बिड़ हुआ कि 97% हिंदू भावाल में आस्था रखते हैं याति आस्थाक हैं। 45% लोग शिव जी को हाथ मानते हैं, जहाँ एक और 15% लोग पर्वती पृथ्वीतम राम-भक्त हैं, वही दूसरी ओर राम जी के अनन्त भक्त इन्द्रिय जी के 35% अनुशयी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिकार योगीयोंने श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूप माँ में आस्था रखते हैं। जैसे करियर और सपा को अनोन्ही पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बजरंगबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक और छोटामगड़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जी कार्यक्रम से हैं, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने जी कार्यक्रम को फिर क्या खुला है। यह क्या विडम्बना है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई.



में करना निम्न सम की सोच और हताता का जीला जागता उदाहरण है। वहीं पी.एफ.आई. कर्तुरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने जी कार्यक्रम में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अलोधा में हुई थी विस्का



है। चुनाव के नतीजे उनकी हस हताता का विरोध मिल चर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदाचर हैं। उनके लिए राष्ट्र सचिवालय है। आजी, स्नाथी तल्ली को कर्नाटक के चुनाव में मत्ता चखाएँ और हम का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। चोरगाज सीकरी ने इस पूरे यामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि यिस देश का आधार ही मनवतन संस्कृति है जहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली जीलने वालों को ताले में बंद करते जा निषेच ले। तो यह देश के लिए दुर्लभ पूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े सब्दों में निंदा करते हैं।

Email : thedallymewat@yahoo.co.in

दैनिक मेरेवाट

बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

— दैनिक बेचारा संस्कृतदाता
मुख्यमान कांपिस द्वाग एकजो
दल पर उत्तीर्ण लगाता और
उमड़ती पौ लफ़ लहर ऐसे मूलना
कहने उनकी लालाका का ज्वलन
उद्धारण है एक अवैज्ञानिक उत्तेजी
द्वाग द्वाग ही मैं सर्व लालाका रागा,
जिसपर वह बिल्ड द्वाग निः वाला लिंग
प्राप्तान में व्यापक रुही है गान
बालाक है। इस लोग रिंग जो
यो उड़ माली है, वहाँ एक ओर
उस लोग बर्बाद पूछानेवाला बह-
मन है, उसी दूसी ओर वह जो
के उत्तम प्रक द्वागर जी के उत्तम
द्वागरोग है। इसी उत्तम लाला-
कागां प्रश्नामानी पौरीराग जी की कृष्ण
और जूला ब्रह्मणी जी के आधार
रुही है। जैसे माली दीर मारा नौ
माली पर रिंगाह है, वहाँ लाला-
का के लालाकारी जो वर्षरावाही मर
रिंगाह है। कई लोग लालाकी मर
रिंगाह कहते हैं और उन



जात्रा गाड़ी थी। एक और दूसरी गाड़ी के सुनायेली के अनुसार वो बहिराम से है, जो उन्हें जगत्प्रद ऐसे कोई सम्भवा नहीं है वहीं कलनिका की विविध की लिख नहीं पहुंचता है। वह यह विद्युत्प्रबन्ध है? इस जगत की सुख-खँडगी यहाँ वो पी-एफ, आर०, से जारी रखा जाता है जो वहीं सुखाव का जगत् जागत् बदलता है। उन्हीं



पर एक अलैंड, ब्रह्मगंगी निवासन स्थान
और असालात्मनिदी या मंदिर
में बहुत बहरा इस जौहो की
प्रतिक्रिया में लगा है।

ब्रह्मगंगा तल की स्थापना १५-
१०-१९४४ में अधिकारी में सुनी वी
दिव्यांग नवाचाहीना को रखने
के लिए थी। वहाँ में उत्तमी अवश्यक
की देखते हुए विषय हिंदू परिवर्तन के
उद्देश्ये कर्त्ता भी उत्तराधिकार लिए

बाबूलाल दल समर्पिताया को होकरना है और प्रश्नपूछतावें को बैठकता है सुकरातामक सोच के द्वारा जो प्रश्नपूछतावें कल्पना करने वाली व्यक्तिगतीय कल्पना है। नुस्खा के नीति-प्रणाली द्वारा उत्तरांश का पर्याप्तम विकास किया गया। इन अवधि-प्रक्रिया के व्यवहार नव 22 लालू कालीनीकार्यों की 25 लालू कालीनी कालीनी के व्यवहार की तरफ सिवा यह प्रश्नपूछतावें ही अधिक व्यापक तरफों को नियन्त्रक के व्यवहार में बदला चाहते हैं और इस एवं ऐसी लोगों को दिया जाता है विभिन्न समीक्षाएं ने इस प्रकार मान्यता पर आधारी प्रश्नपूछतावें के दृष्टि कल्पना कि इनमें देश का सम्बन्ध ही उत्तरांश का व्यवहार व्यवहारीय है वहाँ उत्तरांश कोई पर्याप्ती व्यवहारीयों के बाप में पृथग जाते, प्रश्नपूछतावें व्यवहारीय में व्यवहारीयों द्वारा जानी जाती जाती है और कल्पना का निर्णय लिया जाता है जहाँ उत्तरांश के विषय पृथग व्यवहारीय है ऐसी व्यवहारीय ही उत्तरांश के विषय की जाती है।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

ह्यूमन इंडिया

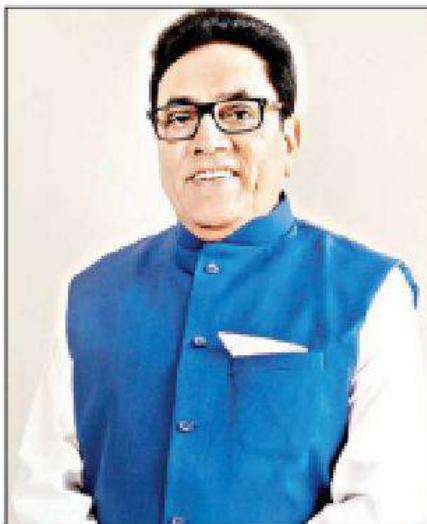
हम बनेंगे आपकी आवाज

हम दर्शने आपकी आवाज

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध दाज सीकरी



प्राचीन भारतीय संस्कृति



गुडगांव टुडे

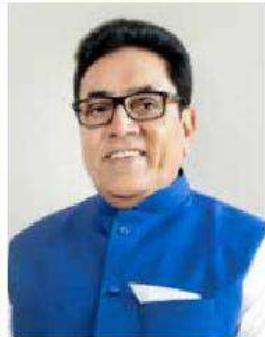
बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग

■ विनाश काले

विपरीत बुद्धि : बोध
राज सीकरी।

गुडगांव टुडे, गुरुग्राम

कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उनकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज़बलन उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा हाल ही में सर्वे करताया गया, जिसमें यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भावान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इट मानते हैं, जहाँ एक और 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहाँ दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार



अलग-अलग प्रतिशत लोगों द्वारा श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहाँ भाजपा के कांगड़ी को बजरंगबली पर विश्वास है। कई

लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक और छोटीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उहाँ बजरंग दल से कोई समर्था नहीं है वहाँ कर्नाटक की कांग्रेस को फिर

बना रहता है। यह क्या बिडब्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कटूरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहाँ बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में रहा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अद्यत्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा को रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विष्व हिंदू परिषद ने उनको कहा और उनका धर्मायत्व दिए। बजरंग दल धर्मायत्व को रोकता है और घुसपैदियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिविधि करना अशोभनीय कार्य

है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कांगड़ी और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्त्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएं और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधगञ्ज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पाठी बजरंगबली के नाम से बृणा करे, अपने शोषणात्मक में बजरंगबली बोलने वालों की ताले में बंद करने का निषय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

ओपन सर्व

बजरंग दल पर प्रतिबंध, कर्नाटक की सियासी जंग

विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

ओपन सर्व/ विशेष संवाददाता
सतत्वार्थ भारद्वाज

गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लागाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त डदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिसमें वह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भाजपा में आस्था रखते हैं चाहिे आरंतिक हैं।

45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ एक और 15% लोग मर्यादा पूर्णोत्तम राम-भक्त हैं, वहाँ दूसरी और राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत शोभाजी श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अलीं पर विश्वास है, वहाँ भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक और छोटीसियह के मुख्यमंत्री के अनुमान जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहाँ कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खलाया है। यह क्या विडम्बना है?



इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारणागती और अलगाववादियों का संगठन है वहाँ बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अशोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए, विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मातिरण को रोकता है और धर्मपर्वतियों को रोकता है। सकाशलक्ष्मी के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे



उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि हैं। आओ, स्वार्थी तत्त्वों को कर्नाटक के चुनाव में मत्ता चखाएं और हार का इनाम ऐसे लोगों के दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आशार ही सचातन संस्कृति है, वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घुणा करे, अपने धोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कहे शब्दों में निर्दा करते हैं।

अमर भारती

क्रण



एक उम्मीद

बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी

अमर भारती संवाददाता गुरुग्राम। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्यलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे वह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं चानि आस्तिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मयादी पूर्णोत्तम राम-भक्त हैं, वहाँ दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत चौगोराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहाँ भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर



विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहाँ कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना

अशोधनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वाधीन तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएं और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पाटी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो वह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

बुलंद खोजा

सम्पादक-संजय सार्थक

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग, विनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी

मुख्याम, बुलंद खोज / लोकेश कुमार। भाजपा प्रदेश कार्यसभित के सदस्य, हरियाणा राज्य सीएसआर ट्रूट के उपाध्यक्ष व पंजाबी विदर्भी महासंगठन के अध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कांग्रेस द्वारा बजरंग दल के प्रतिबंध लगाए जाने के बयान पर कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पौएफआई से तुलना करना ऊनवी हालाशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिसमें यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भागीदार में आख्या रहते हैं यानि आसिक हैं।

45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ एक और 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी और राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रहते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग याहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खेतगा है। वह क्या विडम्बना है सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना



बोधराज सीकरी

बजरंग दल की पौएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हालाशा का जीता जाता उदाहरण है। जहाँ पौएफआई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़े की प्रक्रिया में लगा है। उन्होंने कहा कि बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अमेरिका में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कहीं और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मान्वयन को रोकता है और बुसर्पैटियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभायी कार्य है। चुनाव के नतीजे उनको इस हालाशा का परिणाम मिल्दू कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र स्वर्पांपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएं और हम का इनाम

ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पाटी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

हरियाणा की आवाज़

भिन्नता, चंद्रीगढ़, हिमार से एक साथ प्रकाशित

राष्ट्रवादी हिन्दी दैनिक

वर्ष : 14 अंक : 317

मिवानी शनिवार 06 मई 2023

मूल्य : 3.00 रुपये

कृति नं. : 8

8:33 AM ✓

धर्मांतरण व घुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज सीकरी

गुरुग्राम(राकेश)। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन

एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज छ्वी कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मां में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंग बली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर



छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहां उन्हें बजरंग दल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है।

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहां पीएफआई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है, वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी, जिसका काम शोभा यात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मांतरण को रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे।

8:33 AM ✓



नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित

पार्यानियर

धर्मांतरण व धुसपैठियों को रोकता है बजरंग दल : बोधराज सीकरी

सर्वे में सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में रखते हैं आस्था



बोधराज सीकरी।

गुरुग्राम। हरियाणा सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिवंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलंत उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं।

सीकरी ने कहा कि 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक और 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मां में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर

विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंग बली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहां उन्हें बजरंग दल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है। इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहां पीएफआई कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है, वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

3	बहार हरियाणा सुखनांगी ने दौड़ टार्क तोकता का दिल्ही सुनाल	6	विचार क्रान्ति मैस आरसि प्राविष्ठान के लिए युक्तिकला ग्रंथ हुआ	8	हरियाणा ज्ञान कोशिशों के प्रेरणा ताले ने गोटियों को छोटे जाते	10	छोटर दैर्घ्य ने फिल्म ताद्रत लड़ी करे खेलताज लाता।	12	हरियाणा उत्तर दिल्ही पर 896 लोगों को संवारप का तोड़ा दिया
पृष्ठ 11		राष्ट्रीय दैनिक	प्रेसमाला अन्नपूर्णी जी, भी विलापकर भी आदित्या न विद्युत बड़े विकास विकास हो जाए, वे इस बात की ओर धूम धूम हो।	E-paper : http://jagatkranti.co.in	E-mail: jagatkrantijind@gmail.com	पृष्ठ 12 मुक्त २	 पृष्ठ 11 मुक्त १24 जीन्ड राष्ट्रीय, ६ मई, २०२३ जीन्ड (हरियाणा) से प्रकाशित		

जगत क्रान्ति

कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा हताशा : बोध राज सीकरी

जगत क्रान्ति ► एमके अरोड़ा

गुरुग्राम : भाजपा प्रदेश कार्य समिति के सदस्य, हरियाणा राज्य सीएसआर ट्रस्ट के उपाध्यक्ष व पंजाबी बिरादरी महासंगठन के अध्यक्ष बोधराज सीकरी ने कांग्रेस द्वारा बजरंग दल के प्रतिबंध लगाए जाने के बयान पर कहा कि कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पीएफआई से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97 प्रतिशत हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं। 45 प्रतिशत लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15 प्रतिशत लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35 प्रतिशत अनुयायी हैं।



इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या ख़तरा है। यह क्या विडम्बना है? सीकरी ने कहा कि इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पीएफआई से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

ज्योति दर्पण

Website : www.jyotidarpan.com

हिन्दी दैनिक

बजरंग दल पर प्रतिबंध-कर्नाटक की सियासी जंग

विनाश काले विपरीत बुद्धि- बोध राज सीकरी

गुह्यमा। कर्णीस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध स्थापना और उनको पी.एफ.आई. में तुलना करना उनकी हताहा का जहाजना उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेंसी द्वारा भल ही में सर्वे करतवा गया, जिसमें वह मिठु हुआ कि 97% हिंदू भाजपा में आम्हा रखते हैं यानि आस्तिन हैं। 45% लोग शिव जी को हट मानते हैं, जब एक और 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर गण जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 3.5% अनुशयी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग व्यक्तिगत योगी-जी कृष्ण और शक्ति स्वरूपा मीं में आम्हा रखते हैं। जैसे काहीय और सपा को अलीं पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्बिन्टों को बजरंगकी पर विश्वास है। कहीं लोग आमुकाती पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगकी पर। एक और लोकसभा के मुख्यमंत्री के अनुमान जो कांग्रेस से है, वहीं उन्हें बजरंगदल से कोई समझा नहीं है वहीं कर्नाटक की

कार्रिएस को फिर बचा सकता है। वह क्या खिड़कना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल को पी.एफ.आई. में करना निष्प



सतर की सोच और हताहा का जीत जागा उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कहांपठी विचारधारा और अलगावादियों का संघर्ष है वहीं बजरंग दल जाइने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल को स्थापना 8-10-1984 में अशोका में हुई थी जिसका काम सोभायाचारा की रक्षा के

लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विस लिंग परिवर्त ने उनको

वहीं और उत्तरवायित किया। बजरंग दल धर्मान्वय को रोकता है और सुसंरक्षिती जो रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभाय कारब है। चुनाव के नवीनी उनको इस हताहा का परिवाप सिद्ध कर देंगे। इस समाव एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कर्बिन्टों और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए गोप सर्वोच्च है। आओ, स्वाधीन तत्त्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएं और हर का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए। बोधवाज सोकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि विस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है जहाँ अमर लोह पाटी बनवाकी के नाम से सूचा करे, अमने घोणापत्र में बजरंगकी बोलने वालों को ताली में बंद करने का निर्देश ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े सब्जें में निर्दा करते हैं।

बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी



गुरुग्राम (एनसीआर टाइम्स) गुरुग्राम कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आर्थिक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहां एक ओर 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूपा माँ में आस्था रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विश्वास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या खतरा है। यह क्या

विडम्बना है? इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई. से करना निम्न स्तर की सोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है। बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मात्मक रोकता है और घुसपैठियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा चखाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

नये भारत का अखबार



गुडगाव मेल

DAVP, Northern Rly., DIPR Haryana के विज्ञापनों के लिए अधिकृत

हरियाणा के सभी ज़िलों, चण्डीगढ़ और दिल्ली में प्रसारित

बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंग विनाश काले विपरीत बुद्धि : बोध राज सीकरी

ब्लॉग/गुडगाव मेल

गुडगाव, ५ मई। कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भागीदार में आश्चर्य रखते हैं यानि आसूतक हैं। 45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ एक और 15% लोग यशोदा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहाँ दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्वरूप मां में आश्चर्य रखते हैं। जैसे कांग्रेस और सपा को अलीं पर विश्वास है, वहाँ भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली



पर विश्वास है। कई लोग बाहुबली पर विश्वास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहाँ कर्नाटक की कांग्रेस को फिर क्या ख्वातरा है। यह क्या विडब्ल्यू

है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई. से करना निम्न स्तर की स्तर और हताश का नीति जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कॉट्टरपेंटी विचारधारा और अलगवावादियों का संघर्ष है वहाँ बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना ४-१०-१९८४ में आयी थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। यार में उनकी आश्चर्य को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कई और उनरदायित्व दिए। बजरंग दल धर्मार्थण को रोकता है और युवराजियों को रोकता है। सकारात्मक सोच के दल को प्रतिबोधित करना अशोभनीय कार्य

है। चुनाव के नवीने उनकी इस हताशा का परिणाम सिद्ध कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोच्च है। आजौ, स्वार्थी लोगों को कर्नाटक के चुनाव में भजा चुनाएँ और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मायप्ले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ आगे कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से धूमा करे, अपने धोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसी सोच ही हम कड़े शब्दों में निदा करते हैं।

नमस्कार

बजरंग दल पर प्रतिबंध - कर्नाटक की सियासी जंगविनाश काले विपरीत बुद्धि - बोध राज सीकरी



गुरुज्ञामा कांगेया द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उत्तरांशी पी.एफ.आई.सी तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अभिक्रिया एजेन्टी द्वारा हाल ही में सार्व कटवाया गया, जिसी यह लिङ्ग हुआ कि 97% हिंदू भलावान में आख्या रखते हैं याजि आर्टिकल हैं 45% लोग शिव जी को इष्ट भावते हैं, जहां एक और 15% लोग मर्यादा पुठ्योत्तम राम-भक्त हैं, वहाँ दूर्गांशी और राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीदान श्री कृष्ण और शक्ति रथपान मां में आख्या रखते हैं। जो कांगेया और राष्ट्रीया को अलीं पर विश्वासा है, वहाँ भलापा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विश्वासा है। कई लोग बाहुबली पर विश्वासा करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक और छत्तीदांगढ़ के मुख्यमन्त्री के अनुसार जो कांगेया हो है, वहाँ उन्हें बजरंगदल तो कोई गमना नहीं है वहाँ कर्नाटक की कांगेया को फिट रखा रखता है। यह कथा विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई.सी करना जिम्मन रत्न की गोच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई.कट्टरपंथी विचारधारा और अलगाववादियों का लंगठन है वहाँ बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की रक्षापत्रा ४-१०-१९८४ में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शीघ्रान्तकारी की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आख्या को देखते हुए विश्व हिंदू परिषद ने उनको कहीं और उत्तराधित्व दिए। बजरंग दल धर्मतरण को दोकता है और युतप्रेणियों को दोकता है। राकातालक साम्राज्य के दल को प्रतिवधित करना अधीक्षणीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम रिहू कर देंगे। इस सबसे एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के ठारदन्य हैं। उनके लिए टार्ड, रातोंपटि है। आओ, द्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के पुगाव में माना चलाएं और हाट का इताव ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज टीकटी ने इस पूरे मामले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही राजनीति है वहाँ अगर कोई पाटीं बजरंगबली के नाम से घुणा करे, अपने घोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को ताले में बंद करने का निर्णय ले। तो यह देश के लिए दुर्भियपूर्ण है। ऐसी गोच ही हम कहे शब्दों में जिदा करते हैं।





Viral Sach : Bodhraj Sikri – कांग्रेस द्वारा बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाना और उसकी पी.एफ.आई. से तुलना करना उनकी हताशा का ज्वलन्त उदाहरण है। एक अमेरिकन एजेन्सी द्वारा हाल ही में सर्वे करवाया गया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि 97% हिंदू भगवान में आस्था रखते हैं यानि आस्तिक हैं।

45% लोग शिव जी को इष्ट मानते हैं, जहाँ पक्ष और 15% लोग मर्यादा पुरुषोत्तम राम-भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर राम जी के अनन्य भक्त हनुमान जी के 35% अनुयायी हैं। इसी प्रकार अलग-अलग प्रतिशत योगीराज श्री कृष्ण और शक्ति स्तरण माँ में आस्था रखते हैं।

जैसे कांग्रेस और सपा को अली पर विक्षास है, वहीं भाजपा के कार्यकर्ता को बजरंगबली पर विक्षास है। कई लोग बाहुबली पर विक्षास करते हैं और हम बजरंगबली पर। एक ओर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के अनुसार जो कांग्रेस से है, वहाँ उन्हें बजरंगदल से कोई समस्या नहीं है वहीं कर्नाटक की कांग्रेस की फिर क्या खतरा है। यह क्या विडम्बना है?

इस प्रकार की तुलना बजरंग दल की पी.एफ.आई. से करना निम्न स्तर की सीच और हताशा का जीता जागता उदाहरण है। जहाँ पी.एफ.आई. कट्टरपंथी विचारधारा और अतागाववादियों का संगठन है वहीं बजरंग दल जोड़ने की प्रक्रिया में लगा है।

बजरंग दल की स्थापना 8-10-1984 में अयोध्या में हुई थी जिसका काम शोभायात्रा की रक्षा के लिए था। बाद में उनकी आस्था की देखते हुए विद्व परिषद ने उनको कई और उत्तरदायित दिए। बजरंग दल धर्मांतरण की रोकता है और पूर्स्पैषियों की रोकता है।

सकारात्मक सीच के दल को प्रतिबंधित करना अशोभनीय कार्य है। चुनाव के नतीजे उनकी इस हताशा का परिणाम फिर कर देंगे। इस समय एक अनुमान के आधार पर 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख बजरंग दल के सदस्य हैं। उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। आओ, स्वार्थी तत्वों को कर्नाटक के चुनाव में मजा छोड़ो और हार का इनाम ऐसे लोगों को दिया जाए।

बोधराज सीकरी ने इस पूरे मासले पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिस देश का आधार ही सनातन संस्कृति है वहाँ अगर कोई पार्टी बजरंगबली के नाम से घृणा करे, अपने धोषणापत्र में बजरंगबली बोलने वालों को तातों में बंद करने का निर्णय लें। तो यह देश के लिए दुभीम्यपूर्ण है। ऐसी सीच ही हम कड़े शब्दों में निदा करते हैं।